69348
१५/८६

...क अन्धविश्वास के संशोधक--

मार्टिन लूथर

युग निर्माण योजना
मथुरा
परिग्रहण सं०.....
वर्गांक .....

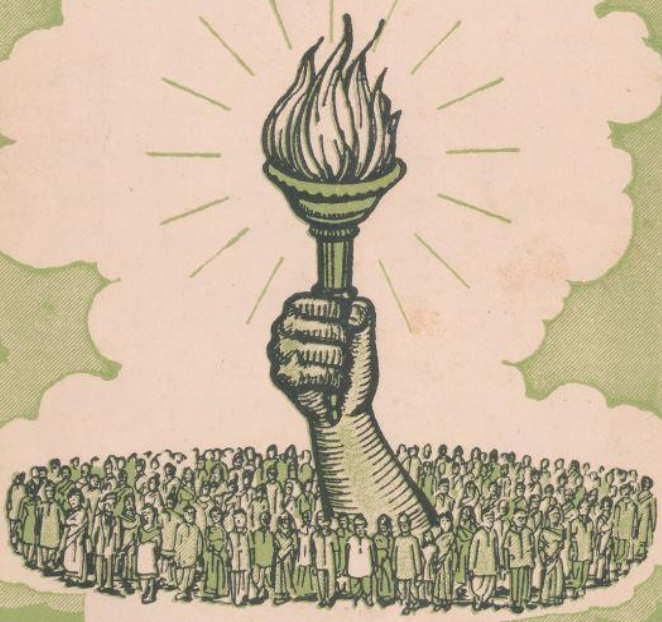

लेखक :—
श्री सत्यभक्त

युग-निर्माण-योजना-मथुरा

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

YUG NIRMAN YOJANA, GAYATRI TAPOBHUMI
MATHURA, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धार्मिक अन्धविश्वासों के संशोधक —मार्टिन लूथर



हमारे देश में धर्म की बड़ी महिमा है। अधिकांश देशों के निवासी तो कहते हैं कि संसार में धन ही सब कुछ है, उसी के लिये मनुष्य को उद्योग करना चाहिये, पर यहाँ ऐसे लोगों की ही अधिकता है जो 'धर्म' को जीवन का सार बतलाते हैं। हम लोग आरम्भ से ही "धर्मो रक्षति रक्षितः" जैसे शास्त्र-वाक्यों को सुना करते हैं और यह भी विश्वास करते हैं कि धर्म ही इह-लोक और परलोक में मनुष्य का सच्चा सहायक है। यही कारण है कि 'धर्म-भावना' ने भारतीय समाज को ऐसा ओत-प्रोत किया है कि यह कहावत प्रसिद्ध हो गई है—"एक हिन्दू का जन्म से लेकर मृत्यु तक का समस्त जीवन धर्म पर ही आधारित होता है।"

वास्तव में यदि हम अपने शास्त्रों में बतलाये "षोडश धर्म-संस्कारों' पर विचार करें तो निश्चय हो जाता है कि उपयुक्त कहावत में कुछ भी अति-शयोक्ति नहीं है। हमारे जन्म लेने से पहले ही गर्भाधान, सीमन्त आदि संस्कार आरम्भ हो जाते हैं और फिर 'नामकरण', विद्याध्ययन', 'उपनयन', आदि संस्कार होकर अन्त में 'मरणोत्तर संस्कार' भी बहुत अधिक विधि-विधान से पूरा किया जाता है। आज चाहे इन संस्कारों का रूप विकृत हो जाने से लोग उनके वास्तविक महत्त्व से अनजान हो गये हैं और केवल लकीर पीटने की तरह नाममात्र को कुछ रस्म अदाकर देते हैं, पर यदि इन 'धर्म संस्कारों' के स्वरूप और क्रम पर विचार किया जाय तो स्पष्ट विदित होता है कि हमारा जीवन निश्चय ही धर्म द्वारा अनुशासित है और यदि हम सच्चे अर्थों में उसका पालन करें तो हमारा मानव-जन्म सार्थक हो सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर समय का एक मुख्य लक्षण 'परिवर्तनशीलता' भी माना गया है और इसके प्रभाव से हमारे सांसारिक व्यवहारों की तरह धार्मिक विधि-विधानों में भी अन्तर पड़ता रहता है। समय आता है कि हम उसके लाभकारी और समयोपयोगी रूप को भूलकर कुछ निरर्थक रस्मों को ही पालन करने लग जाते हैं और अपने मन में समझते रहते हैं कि हम 'धर्माचरण' करते तो हैं ! इस तथ्य को ध्यान में रखते हुये भारतवर्ष के सभी प्राचीन मनीषियों ने अपनी रचनाओं में सबसे पहले 'धर्म' की व्याख्या कर दी है और यह स्पष्ट कह दिया है धर्म का एक प्रत्यक्ष और सबकी समझ में आ सकने वाला लक्षण यह है कि उसके द्वारा मनुष्य का लोक और परलोक दोनों में सदा-सर्वदा कल्याण ही होता है। उदाहरणार्थ 'वैशेषिक दर्शन' के आरम्भ में ही कहा गया है—

"यतोऽभ्युदयानिःश्रेयससिद्धिस्स धर्मः।"

अर्थात् "जिसके द्वारा संसार में सब प्रकार कल्याण और उन्नति हो और परलोक में मोक्ष की प्राप्ति हो वही धर्म है।" इसकी व्याख्या करते हुये कहा गया है कि "धर्म से ही लोक-कल्याण की सिद्धि होती है। जहाँ धर्म न होगा वहाँ पाप-कर्मों के कारण श्रेष्ठ कर्मों की तरफ मन की प्रवृत्ति नहीं हो सकती और लोकाचार अर्थात् अतिथि सत्कार, सदाचार, अहिंसा आदि कर्मों का पालन भी नहीं हो सकता। पाप-कर्मों से तो दुःख ही मिलता है। पापियों के घर का वातावरण भी दूषित रहता है और वहाँ दुष्कर्मों का साम्राज्य होने से कभी कल्याण के दर्शन होते ही नहीं।" "मनुस्मृति" (मानव-धर्म-शास्त्र) और अन्य धर्म-ग्रन्थों में भी धर्म का मुख्य लक्षण यही बताया गया है कि जिस मार्ग का अनुसरण करने से चिरस्थायी सुख और आन्तरिक शांति प्राप्त हो वही धर्म है।

धर्म में विकृति—

पर ऋषियों और ज्ञानी पुरुषों के सिद्धांत और उपदेश को सुनकर भी अनेक मनुष्य अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिये अर्थ का अनर्थ करके धार्मिक विधि-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विधानों में हानिकारक परिवर्तन करने में संकोच नहीं करते। पुराणों में एक कथा आती है कि अति प्राचीन काल में लोग वन, जङ्गल, खेतों आदि से जिन फल, फूल और खाने योग्य बीजों को इकट्ठा करते थे, उन्हीं का एक अंश यज्ञाहुति के रूप में देवताओं को भी भोग लगा देते थे। बाद में कुछ लोग माँसाहारी हो गये और वे माँस की ही आहुति देने लगे।

इस कार्य को तामस भावापन्न और आध्यात्मिकता के विपरीत समझ कर ऋषियों ने इसका विरोध किया। इस पर सब लोग एक वृद्ध राजा के पास इसका निर्णय कराने गये। माँसाहारियों में राजा के अनेक अनुयायी भी थे, इसलिये उसने उनके पक्ष में निर्णय कर दिया और जनता में 'माँसाहुति' का इतना अधिक प्रचार हो गया कि अनेक यज्ञों में तो साक्षात् कसाईखाने का-सा दृश्य दिखलाई पड़ने लगा। इस दुर्दशा का सुधार करने के लिये महात्मा बुद्ध और महावीर स्वामी ने प्रयत्न किया। आरम्भ में उनको कुछ सफलता प्राप्त हुई, पर स्वार्थी व्यक्तियों ने फिर देवी की पूजा के नाम पर बलिदान की प्रथा प्रचलित कर दी और आज अनेक मन्दिरों में नवरात्रि के अवसर पर खून की धारा बह जाती है।

इसी प्रकार स्वार्थी और अन्धविश्वासों के प्रचारक धर्म में बिकृति करते रहते हैं। वे उत्तम से उत्तम नियमों में धीरे-धीरे ऐसा परिवर्तन ला देते हैं कि वह लाभकारी होने की अपेक्षा हानिकारक सिद्ध होने लग जाता है और जनता के नैतिक पतन का कारण बन जाता है। ऐसे ही लोगों ने धर्म की ऐसी छीछालेदर की कि दिवाली के उपलक्ष्य में जुआ खेलना, होली के अवसर पर अश्लील गालियाँ बकना, शिवरात्रि पर भाँग और गाँजा का सेवन करना भी 'धर्म का अङ्ग' मान लिया गया। इन कुप्रथाओं ने आज तक कितने लोगों को पतनोन्मुख बनाकर पाप-मार्ग पर चलाया होगा उनकी गिनती नहीं की जा सकती।

ईसाई-धर्म में भ्रष्टाचार की पराकाष्ठा—

जो दुर्दशा हमारे देश में धर्म की देखने में आती है, वही योरोप में किसी समय ईसाई धर्म की हो गई थी। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि महात्मा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ईसा के उपदेश दया, क्षमा, उदारता, भ्रातृभाव आदि पर आधारित अत्यन्त धर्मानुकूल और कल्याणकारी थे। उन्होंने सेवा और परोपकार को ही परम धर्म बतलाया और त्याग पर इतना अधिक जोर दिया कि धनवान व्यक्तियों को स्वर्ग में जा सकने के सर्वथा अयोग्य घोषित कर दिया था। उन्होंने उच्च स्वर से कहा—"सुई की नाके (छेद) में होकर ऊँट का निकल जाना भले ही सम्भव हो जाय पर धनवान व्यक्ति स्वर्ग के द्वार में होकर भीतर नहीं घुस सकता !" उनका आशय यही था कि अधिक धन प्रायः अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार के द्वारा ही कमाया जाता है, और फिर उसके फलस्वरूप मनुष्य में अनेक दुष्प्रवृत्तियाँ और दुर्व्यवहार उत्पन्न हो जाते हैं, इसलिये बुद्धिमान धर्मात्मा मनुष्य को उससे शुरू से ही सावधान रहना चाहिये।

कुछ समय तक तो महात्मा ईसा के उपदेशों का प्रभाव लोगों पर बना रहा और अनेक धनवानों के पुत्रों ने सर्वस्व त्यागकर गरीबों की सेवा का व्रत ग्रहण कर लिया और वे ही सन्त (सेण्ट) कहलाये। पर क्रमशः उसमें स्वार्थियों का प्रवेश होने लगा और वे ईसाई-साधुओं (पादरियों) का वेष धारण करके धर्म की दुकानदारी करने लग गये। जिस प्रकार हिन्दू-धर्म में कितने ही पण्डित-पुजारियों ने ऋषियों के बतलाये अध्यात्म, ज्ञान, उपासना, निष्काम कर्म के उच्च सिद्धान्तों को अदल-बदल कर केवल बाह्य पूजा-पाठ और दक्षिणा देने को ही सबसे बड़ा धर्म बना दिया उसी प्रकार ये पादरी सर्वसाधारण को अपनी पेट-पूजा के अनुकूल धर्म-क्रियाओं का उपदेश देने लगे। उनका वर्णन करते हुये तत्कालीन इतिहासों में कहा गया है—

"उन दिनों ईसाई मत के नाम पर बहुत से दुराचार समाज में फैलाये गये थे। ईसाई पुजारी (पादरी) अपने को ही जगतपूज्य और बड़ा बतलाते थे। वे लैटिन (प्राचीन भाषा) में पूजा-पाठ और प्रार्थना करते थे, जिसका प्रचलित भाषा में उल्था करना पाप समझा जाता था। वे अपने में अद्भुत शक्ति बतलाते थे। वे ईश्वर से पाप भी क्षमा कराते थे। यदि कोई मनुष्य पाप करता और उसे पादरियों से कह देता तो वे उसे पापमुक्त करा सकते थे। वे इस कार्य की फीस (दक्षिणा) लेते थे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किसी ने कोई पाप किया और जाकर पादरी से कहा कि मुझसे अमुक पाप हो गया है, तो पादरी हुक्म देते थे—'अच्छा माता मरियम की मूर्ति के सम्मुख २० दीपक जला दो और यह मन्त्र ५० बार जपो।' किसी से कहा जाता था कि 'जाओ, अमुक तीर्थ की यात्रा कर आओ।' पापी से रुपया पाने पर वे उसके पाप को क्षमा करने की प्रार्थना ईश्वर से करते थे। धनाढ्य पापात्माओं से वे 'पाप-विमोचन' (प्रायश्चित) के लिये खूब रुपया लेते थे। सर्वसाधारण को उन्होंने विश्वास दिला रखा था कि वे रुपया लेकर पापियों को नरक की यातना से बचा सकते हैं, और नरक में गिरी हुई पापात्माओं का उद्धार करा सकते हैं। इस प्रकार उनको खूब आमदनी होती थी।"

इस प्रकार ठगी करने वाले पादरियों का नेता रोम नगर का 'पोप' था। वह अपने को प्रभु ईसा का खास प्रतिनिधि बतलाता था और 'जगतगुरु' होने का दावा करता था। उसने अपने इन अनुयायिओं की सहायता और तरह-तरह की चालों से अपना प्रभाव समस्त योरोप में इतना जमा लिया था कि बड़े-बड़े राजाओं को गद्दी पर बैठाना या उतार देना, उसके लिये साधारण बात हो गई थी। यद्यपि पोप और उसके अनुयायी उन 'महन्तों' के क्वारे (ब्रह्मचारी) रहने का नियम था, पर वे पर्दे की आड़ में हर तरह का दुराचार करते थे। आजकल हमारे देश के महन्तों और साधुओं की जो दशा दिखलाई पड़ रही है, उन पादरियों का रहन-सहन और आचरण उसी के अनुरूप था।

इतना ही नहीं, पोप का राजाओं और समस्त बड़े अधिकारियों पर धार्मिक आधिपत्य होने से वह अपने विरोधियों को कड़ी से कड़ी सजा दिया करता था। उस जमाने में 'धर्म' के नाम पर जितने व्यक्ति जीवित जला दिये गये अथवा उससे भी कठिन यन्त्रणाएँ देकर मारे गये, उनकी गिनती कर सकना असम्भव है। स्पेन का नाम तो इस दृष्टि से बहुत ही बदनाम है। वहाँ 'पोप' की बातों का विरोध करने वाले अथवा किसी भी प्रचलित धार्मिक मान्यता पर अविश्वास करने वाले व्यक्ति को नई-नई तरह की अमानुषिक यातनाएँ देकर मारने का ढङ्ग निकाला गया था। इसका नाम 'इक्वीजिशन' था।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जन्म और शिक्षा—

ऐसे समय में जर्मनी के एक कस्बे—'इस्लेबन' में मार्टिन लूथर (सन् १४८३ से १५४६) का जन्म हुआ। उसका पिता एक साधारण किसान था, पर उन दिनों गरीबी के कारण लकड़हारे काम करने लग गया था। कहते हैं कि बचपन में उसका स्वभाव विशेष हठीला और क्रोधी था, इससे वह मारा-पीटा अधिक जाता था। उसे बहुत छोटी अवस्था में ही पाठशाला भेज दिया गया। वहाँ पर गुरुजी भी छड़ी से काम लेने वाले थे। एक बार किसी साधारण बात पर लूथर को १५ बेंत की सजा दी गई।

कुछ दिन बाद लूथर के पिता ने लोहे का काम करना आरम्भ किया और इसमें उसकी आर्थिक दशा कुछ सुधर गई। १४ वर्ष की आयु में उसे नगर के एक हाई स्कूल में अध्ययन करने भेजा गया। पर उसका बाप उसे अब भी पूरा खर्च नहीं दे सकता था, क्योंकि उसके और भी कई बच्चे थे। इसलिये मार्टिन लूथर को अपना काम बड़ी कठिनाई से चलाना पड़ता था। उस जमाने में जर्मनी में यह प्रथा थी कि गरीब विद्यार्थी भिक्षा माँगकर अध्ययन कर सकते थे। यह अवस्था हमारे प्राचीन गुरुकुल-पद्धति से मिलती थी, जब कि गरीब-अमीर सभी विद्यार्थियों को भिक्षा माँगकर ही भोजन की व्यवस्था करनी पड़ती थी। लूथर भी ऐसा ही करता था। वह धार्मिक भजन गाकर भिक्षा माँगता था। उसका स्वर मधुर था और उसके मुँह से प्रभु ईसा की लीलाएँ बड़ी प्रभावोत्पादक लगती थीं। इसलिये उसे भिक्षा सुगमता से मिल जाती थी।

कुछ समय बाद उसके पिता ने पुत्र की कठिनाइयों का हाल जानकर उसे एक अन्य नगर में भेज दिया, जहाँ उसका एक सम्बन्धी रहता था। पर उस सम्बन्धी ने भी लूथर की अधिक सहायता न की। इसके यहाँ भी विवश होकर उसे भिक्षा द्वारा ही गुजारा करना पड़ता था। एक दिन तीन घरों पर भिक्षा माँगने पर भी जब उसे खाली हाथ लौटना पड़ा तो वह बड़ा दुःखी हुआ और सोचने लगा कि ऐसी दशा में वह किस प्रकार पढ़ सकेगा? जब

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वह इस प्रकार व्यथित हृदय से भगवान को याद कर रहा था तो मार्ग स्थिति एक घर का दर्वाजा खुला और एक महिला बाहर निकली। जैसे ही उसकी दृष्टि लूथर पर पड़ी, वह उसका करुणाजनक भाव देखकर बड़ी दुःखी हुई और उसे घर में ले जाकर भिक्षा दी। वह लूथर के धार्मिक भजनों और ईश-प्रार्थना को सुनकर इतनी प्रसन्न हुई कि उसने अपने पति मिस्टर कोटा से कह कर लूथर के भोजन-वस्त्र का स्थायी प्रबन्ध अपने यहाँ ही कर दिया। लूथर ने इसे ईश्वर का बहुत बड़ा अनुग्रह माना और वह एकाग्र मन से विद्याध्ययन में संलग्न हो गया। चार वर्ष में उसने विद्यालय की पढ़ाई समाप्त करके सम्मान के साथ परीक्षा पास करली।

आस्तिकता का उदाहरण—

इस वृतान्त से हमको स्वामी विवेकानन्द के जीवन की उस घटना की याद आती है जब संसार का यह महापुरुष एक दिन अमरीका के शिकागो नगर में निराश्रय घूम रहा था और सोच रहा था कि आज की रात कैसे व्यतीत की जायगी ? यह एक अभूतपूर्व स्थिति थी। एक विद्या और ज्ञान का भण्डार, जिसने स्वेच्छा से सर्वस्व त्यागकर हिन्दू धर्म के उद्धार के लिये संन्यास ग्रहण कर लिया था और जो कुछ सप्ताह पश्चात् उसी शिकागो के "विश्व-धर्म-सम्मेलन" में संसार के सर्वश्रेष्ठ धर्म प्रचारक की पदवी पाने वाला था, आज यह चिन्ता कर रहा था कि बिना पैसा-रुपया इस धनकुबेर देश की महानगरी में मुझे कौन ठहरने देगा ? फिर भी उनको ईश्वर पर पूर्ण विश्वास था। चलते-चलते थककर वे रास्ते के एक किनारे बैठ गये। सामने ही एक धनी का विशाल भवन था। अकस्मात् उसका दरवाजा खुला और गृहस्वामिनी ने पास आकर स्वामीजी का परिचय पूछा। वह उनको घर ले गई और उनके ठहरने व भोजन आदि की सुव्यवस्था कर दी।

लूथर और विवेकानन्द दोनों ही संसार के महापुरुष हैं। लूथर ने भिक्षा माँगकर ज्ञान-संग्रह किया और उसके द्वारा ईसाई धर्म को भ्रष्टता और दुराचार से मुक्त करके उसे संसार में फैलने योग्य बना दिया। यही कारण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है कि आज चार सौ वर्ष से अधिक बीत जाने पर भी वह ईसाइयों के 'प्रोटेस्टेण्ट' सम्प्रदाय का आचार्य माना जाता है और करोड़ों मनुष्य उसको मस्तक नवाते हैं। विवेकानन्द ने भी विधर्मियों के आक्रमणों से जर्जरित और विदेशों में 'कुख्यात' हिन्दू-धर्म का झण्डा फिर से संसार भर में फहरा दिया। उनके महान त्याग और निस्वार्थ सेवा-धर्म का ही यह परिणाम है कि आज उस भिक्षा माँगने वाले संन्यासी की शताब्दी अनेक देशों में मनाई जा रही है और भारतवर्ष के अन्तिम भूमिखण्ड—कन्याकुमारी में उनका स्मारक निर्माण किया जा रहा है।

इन दोनों ईश्वर के भरोसे रहने वाले महापुरुषों को विपत्ति काल में ठीक एक तरह से आकस्मिक सहायता मिलने की घटना में यद्यपि कोई चमत्कार नहीं है, तो भी यह स्वीकार करना पड़ता है कि जो ईश्वर पर आन्तरिक विश्वास रखते हैं उनको दैवी सहायता और रक्षा भी प्राप्त होती रहती है। आस्तिकता की शक्ति कम नहीं है, आवश्यकता यही है कि हमारा मनोभाव सच्चा और सरल हो।

लूथर का महान त्याग—

विद्यालय की परीक्षा पास करके लूथर कानून का अध्ययन करने अस्फर्ट यूनीवर्सिटी में दाखिल हो गया। अब उसका पिता भी उसे कुछ सहायता देने लगा था, क्योंकि वह चाहता था कि मेरा पुत्र एक नामी वकील बनकर खूब रुपया पैदा करे, जिससे घर की हालत सुधरे। विश्वविद्यालय में भी लूथर की योग्यता, परिश्रम और सचाई को देखकर सब अध्यापक तथा सहपाठी प्रसन्न रहते थे। पर इस समय भी वह अपने धार्मिक कर्तव्यों को नहीं भूला था। कानून के अध्ययन में काफी परिश्रम करते हुये भी वह कई घण्टे का समय ईश्वर-प्रार्थना और भजन-गाने में लगाता था। उसका कहना था कि ईश्वर की उपासना के द्वारा ही वास्तविक अध्ययन होता है।

विद्यालय के पुस्तकालय में एक दिन उसे 'बाइबिल' की पुस्तक मिल गई। उस समय छापने की कला का आविष्कार हुये थोड़े ही दिन हुये थे और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

छपी हुई बाइबिल इस प्रकार गली-गली में नहीं मिलती थी, जैसी कि आज देखने में आती है। जिस प्रकार हमारे देश में आजसे सौ-डेढ़ सौ वर्ष पूर्व हस्त-लिखित ग्रन्थों का प्रचार होने से उनका मिल सकना कठिन होता था और वेद, स्मृति आदि प्रमुख ग्रन्थों का तो दर्शन होना भी सौभाग्य की बात समझी जाती थी, वही हालत उस समय योरोप में भी थी। एक तो उस समय इतनी बड़ी पुस्तक का छाप सकना ही अत्यन्त परिश्रम-साध्य था और दूसरे वह केवल लैटिन भाषा में थी जिसके जानने वाले बहुत कम होते थे। जिस प्रकार हमारे यहाँ के धर्म-व्यवसायी 'पण्डितों' ने वेद और शास्त्रों को देशी भाषाओं में अनुवाद करना पाप बतलाया था, और राजा राममोहन राय जैसे सुधारकों ने जब वेद और उपनिषदों के कुछ अंशों का अनुवाद करा के छपाया तो उनको धर्म का अपराधी और जाति बहिष्कृत घोषित कर दिया था, वही हालत योरोप के पादरियों की थी। वे इस पुस्तक को जहाँ तक सम्भव था सर्वसाधारण की पहुँच से बाहर रखते थे और उसके नाम पर स्वयं ही मन-माना उपदेश देकर लोगों को अपना अनुयायी बनाये रखने का प्रयत्न करते रहते थे।

इसलिये पुस्तकालय में बाइबिल को देखकर लूथर बड़ा प्रसन्न हुआ और बार-बार ईश्वर को धन्यवाद देने लगा। वह बड़े मनोयोग से उसे पढ़ने और मनन करने लगा। इसके आगे उसे खाने-पीने की भी याद नहीं रहती थी। बाइबिल के द्वारा उसे धर्मतत्त्व की वास्तविकता का ज्ञान होने लगा और उसने अपना जीवन उसी के अनुकूल बनाने का निश्चय कर लिया। लूथर के साथी अनेक विद्यार्थी उसे 'बाइबिल' पढ़ने में इतना तल्लीन देखकर उसकी हँसी करते थे और कहते थे कि इस पुस्तक ने गिरजाघरों में बड़े-बड़े अनर्थ किये हैं, इसे पढ़कर क्या करोगे ?

पर लूथर के बाइबिल पढ़ने और पादरियों के पढ़ने में बड़ा अन्तर था। वे केवल दिखावे के लिये ऐसा करते थे और उसकी बातों को धन कमाने का साधन बनाते थे, जब कि लूथर उसके द्वारा महापुरुष ईसा के जीवन-दाता दैवी उपदेशों और उसके दैवी आदर्श को ग्रहण करता था और विचार करता था

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वह भी किसी दिन अपने ज्ञान और शक्ति का उपयोग धर्म की सेवा के लिये ही करेगा।

धर्म के लिये जीवन अर्पण—

लूथर ने अपने साथियों के हँसी-मजाक की तरफ कुछ ध्यान न दिया और वह नियमित रूप से धार्मिक अध्ययन भी करता रहा। जब अन्तिम परीक्षा का अवसर आया तो उसने पढ़ने में इतना अधिक परिश्रम किया कि वह बीमार पड़ गया। बीमारी इतनी भयंकर थी कि उसने अपने बचने की आशा छोड़ दी। एक दिन कोई वृद्ध पादरी उससे मिला और उसकी अवस्था देखकर बड़ा दुःखी हुआ। लूथर ने कहा कि अब तो मेरा इस दुनियाँ से चलने का समय आ पहुँचा है। इस पर वृद्ध ने उसे आशीर्वाद देते हुये कहा—"नहीं बेटा! ऐसा विचार मत करो। ईश्वर को तुम्हारे हाथ से अभी संसार का बहुत उपकार कराना है।"

बीमारी से अच्छा होकर जब फिर पढ़ने का उद्योग करने लगा तो एक दूसरी विपत्ति में पड़ गया। उस जमाने में अधिकांश व्यक्ति तलवार साथ में लेकर चला करते थे। लूथर भी एक दिन तलवार लेकर अपने सम्बन्धियों से मिलने गया तो अकस्मात तलवार म्यान से निकल कर पैर पर गिर पड़ी। इससे पैर घायल हो गया और उससे बहुत खून निकलने लगा। पीड़ा और भय से लूथर बेहोश हो गया। एक डाक्टर से उसका इलाज कराया गया, तब कई दिन में वह चोट ठीक हुई।

इन आपत्तियों को सहन करते हुये भी लूथर ईश्वर पर विश्वास करके फिर अध्ययन में लग गया और सन् १५०५ में उसने एम० ए० की परीक्षा पास करली। उस जमाने में इतनी विद्या प्राप्त कर लेना बहुत बड़ी बात मानी जाती थी। इसलिये उपाधि-प्रदान के अवसर पर बड़ी खुशी मनाई और अनेक व्यक्ति जलती मशाल लेकर उसका सम्मान करने के लिये आये। उसका सार्वजनिक रूप से स्वागत किया गया। इसके पश्चात् लूथर कानून का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिये विशेष अध्ययन करने लगा, और उसमें भी उसे अच्छी सफलता प्राप्त हुई।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अब दो-एक घटनाएँ ऐसी हुई जिनसे लूथर का धर्म-सेवा और त्याग का भाव और भी दृढ़ हो गया। उसका एक घनिष्ठ मित्र 'अलेक्सिस' नामक था। वह बड़ा सज्जन और सहृदय युवक था। एक दिन किसी ने उसे मार दिया। लूथर को अपने मित्र की मृत्यु पर बड़ा शोक हुआ और साथ ही मन में यह विचार भी उत्पन्न हुआ कि किसी दिन सहसा मेरा भी अन्त हो सकता है। इस घटना से संसार की क्षणभंगुरता की भावना उसके हृदय पर अङ्कित हो गई।

दूसरी बार जब वह अपने घर से विद्यालय की तरफ जा रहा था तो रास्ते मे बड़े जोर का तूफान आया। बड़े भयंकर शब्द से बादल गरजने और बिजली कड़कने लगी। अकस्मात् उसके सामने ही बिजली जमीन पर गिरी और उसे जान पड़ा मानो प्रलयकाल आ गया। उसने ईश्वर से प्रार्थना की यदि मेरे प्राण बच जायेंगे तो मैं अपने को तेरी सेवा में अर्पण कर दूँगा।

लूथर की मनौती अन्य लोगों के समान केवल मुँह से कहने की नहीं थी, वरन् शीघ्र ही उसने उसे कार्य रूप में परिणित कर दिखाया। कहाँ तो वह कानून की विशेष योग्यता प्राप्त करने में संलग्न था, जिससे उसके घर वालों तथा मित्रों को आशा थी कि वह शीघ्र ही राज्य-मन्त्री के पद तक पहुँच जायगा और कहाँ सब कुछ त्याग कर वह पादरियों के आश्रम में प्रविष्ट होकर पूरा संसारत्यागी बन गया। इस बात से उसका पिता बड़ा दुःखी हुआ क्योंकि उसने भविष्य के लिये बड़ी-बड़ी आशायें लगा रखी थीं। उसके मित्रों ने भी उसे बहुत समझाया कि इस प्रकार वैरागी बन जाने से जीवन निकम्मा हो जायगा, पर उसने परमेश्वर के सामने जो प्रतिज्ञा की थी उससे पीछे हटना हर्गिज स्वीकार न किया।

पर पादरियों के आश्रम में भी लूथर को वह त्याग-भावना और हृदय की शुद्धता दिखाई न दी जिसकी खोज में वे घरबार को त्याग कर यहाँ आये थे। पादरियों में से दो-चार ही ऐसे थे जिनका ध्यान ईश्वर की तरफ लगा था और जिनका आचरण पवित्र माना जा सकता था। अन्यथा सभी ईश्वर और आत्मा की चिन्ता करने के बजाय शरीर की चिन्ता अधिक करते थे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जब वे लूथर को ईश्वर-चिन्तन और धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन करते देखते तो कहते—"केवल ईश्वर-चिन्तन से काम न चलेगा, पहले अपनी दाल-रोटी की चिन्ता करो।"

उन लोगों का ध्यान इसी प्रकार की तुच्छ बातों की तरफ लगा देख कर और प्रायः ऐसे ही विषयों पर वार्तालाप करते सुनकर लूथर को उनकी स्थिति पर शोक होता था। फिर भी उनकी आज्ञानुसार वे दरवाजा खोलना और बन्द करना, कमरों में झाड़ू लगाना, गिर्जा को धोना आदि छोटे काम भी खुशी से करते थे। एक उच्च शिक्षित व्यक्ति का, जो अभी तक विश्व-विद्यालय का शानदार जीवन व्यतीत कर रहा हो स्वेच्छा से ऐसी दास-वृत्ति को स्वीकार कर लेना कोई साधारण त्याग न था।

इन कार्यों के साथ लूथर को भिक्षा मांग कर भोजन-सामग्री भी लानी पड़ती थी। वे जितने अधिक अध्ययन-प्रिय थे आश्रम निवासी अन्य पादरी उतने ही भोजन-प्रिय थे। वे सदा यही कहा करते थे—"अजी पढ़ने-लिखने में क्या रखा है! बढ़िया खाने की चीजें और रुपया लाओ, जिससे आश्रम को लाभ पहुँचे।" लूथर ऐसे विचारों को बहुत निकृष्ट समझते थे, तो भी उनके आदेश को मानकर झट भिक्षा की झोली कन्धे पर रख कर चल देते। फिर भी उनका अधिक समय ईश्वर-भजन और बाइबिल पढ़ने में लगता था। साथ ही वे व्रत भी करते रहते थे। एक बार चार दिन तक लगातार व्रत रखा। दूसरी बार सात सप्ताह तक सोना छोड़ दिया। इस प्रकार की तपस्या द्वारा उनका उद्देश्य अपने मन और शरीर को अधिकाधिक शुद्ध बनाना था जिससे उनकी धार्मिक भावना अविचल और एक सच्चे साधु के योग्य हो सके।

इस प्रकार दो वर्ष तक धर्म-सेवा के कठिन मार्ग पर चलकर उनको पुजारी (पादरी) की पदवी प्राप्त हुई। उनने अपने मन में विचार किया कि इस अवसर पर पिता के असन्तोष को दूर करके उन्हें प्रसन्न करने की चेष्टा की जाय। इस निमन्त्रण को पाकर घर वाले उत्सव में आये और सब लोग प्रेम से मिले। जब लूथर के वैराग्य के सम्बन्ध में चर्चा हुई तो एक पादरी ने पिता से कहा—"आप बड़े सौभाग्यशाली हैं कि लूथर जैसा पुत्र हुआ। लोग

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सांसारिक धन-मान के पीछे दौड़ते रहते हैं, पर इसने उस सबको पाकर भी धर्म के कठिन मार्ग को अंगीकार किया।" इस पर पिता ने नाराज होकर कहा—"महाराज ! इन बातों को रहने दीजिये ! क्या बाइबिल में यह नहीं लिखा है कि युवा पुत्र को अपने माता-पिता की सेवा करनी चाहिये ?" इस समय लूथर की आयु २४ वर्ष की हो चुकी थी। उन्होंने पिता की बात का प्रतिवाद तो नहीं किया, पर वे अपने मार्ग पर ही चलते रहे और दो वर्ष बाद उनको 'पादरी' की पदवी मिल गई।

इसके पश्चात् उनको 'विटनबर्ग' के विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र का प्राध्यापक नियत किया गया। लूथर इस उच्च पद पर काम करते हुये भी एक छोटी कोठरी में ही रहते थे और त्यागमय जीवन बिताते थे, क्योंकि उनको साधु-जीवन प्रिय जान पड़ता था। कुछ दिन बाद वे बाइबिल पढ़ाने लगे। उनका धर्म सम्बन्धी ज्ञान इतना गम्भीर और तथ्यपूर्ण था कि उनके विद्यार्थियों की संख्या निरन्तर बढ़ने लगी और उनका नाम दूर-दूर तक प्रसिद्ध हो गया। कितने ही अध्यापक भी उनका भाषण सुनने आते थे और उनसे नये विचार और धर्म के तथ्यों को ग्रहण करते थे।

एक विद्वान उनके विचारों से बहुत प्रभावित हुआ और उसने अपनी मित्र-मण्डली में कहा—"यह युवक ईसाई धर्म की बड़ी उन्नति करेगा और उसमें बहुत कुछ परिवर्तन उत्पन्न करने वाला भी सिद्ध होगा।" यद्यपि धर्म सम्बन्धी जो बातें लूथर कहते थे उनको अन्य अनेक लोग भी जानते थे, पर अन्तर यह था कि जो वे कहते थे उस पर हृदय से विश्वास भी करते थे। यह हृदय की शुद्धता और कथनी तथा करनी की एकता ही होती है जो किसी व्यक्ति के उपदेशों को प्रभावशाली बना देती है।

लोगों ने लूथर से प्रार्थना की कि आप गिर्जाघर में जनता को उपदेश दिया करें। पहले तो लूथर ने अपने को इस उत्तरदायित्व के अयोग्य बतला कर इनकार कर दिया, पर जब अनेक व्यक्ति आग्रह करने लगे तो वे एक छोटे गिर्जाघर में भाषण करने लगे। उनके उपदेशों को सुनकर इतनी भीड़

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इकट्ठी होने लगी कि उस गिर्जा में बैठना असम्भव हो गया। तब उनके भाषणों की व्यवस्था एक बड़े स्थान में की गई।

रोम-यात्रा और शङ्का उत्पन्न होना—

अभी तक लूथर प्राचीन धर्म के अनुयायी थे और 'पोप' में बड़ी श्रद्धा रखते थे। उनकी बड़ी इच्छा थी कि एक बार 'धर्मपुरी रोम' की यात्रा करके 'पोप' के दर्शन करें। उस समय धार्मिक जगत में फैले हुये ढोंग और भ्रष्टाचार का उनको अधिक पता नहीं था और वे सबको अपनी ही तरह शुद्ध-हृदय समझते थे।

सन् १५१० में उनको एक धर्म सम्बन्धी निर्णय के लिये रोम जाने को कहा गया। इससे उनको बड़ी प्रसन्नता हुई। रास्ते में जब वे एक पादरियों के मठ में ठहरे तो देखा कि वहाँ के निवासी बड़े ठाठ-बाट से रहते हैं और धार्मिक नियमों की कुछ परवाह नहीं करते। साधु-आश्रमों के नियमानुसार शुक्रवार को निरामिष-भोजन का ग्रहण करना आवश्यक माना जाता था, पर वे खुल्लम-खुल्ला इसका उल्लंघन करते थे। जब लूथर ने इस तरफ उनका ध्यान आकर्षित किया तो वे बड़े नाराज हुये और दरबान द्वारा कहलाया—"आप चुपचाप यहाँ से चले जायें अन्यथा हानि उठानी पड़ेगी।" लूथर तो सच्चे धर्मान्वेषी थे, तुरन्त अपना डेरा-डण्डा उठा कर वहाँ से रवाना हो गये।

जब वे रोम के समीप पहुँचे तो उन्होंने बड़ी श्रद्धा से दण्डवत करके कहा—"पवित्र रोम ! तुझको प्रणाम है !" उन्होंने बड़े ही भक्ति-भाव से ईसाइयों की उस 'काशी नगरी' में प्रवेश किया। एक पादरी ने उनसे कहा—"लूथर ! देखो, यह वही सोपान है, जिस पर चढ़कर प्रभु ईसामसीह स्वर्ग सिधारे थे। इसका नाम 'पाईलेट स्टेअर' है। इसका अभी तक यह प्रभाव है कि 'पोप' जिस किसी को इस पर चढ़ा देते हैं उसके समस्त पाप दूर हो जाते हैं और वह निश्चय ही स्वर्ग चला जाता है।" लूथर इस "काशी-करवट" के सामन मुक्ति प्राप्त कराने वाली गप्प को सुनकर भी रोम के पादरी के सामने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नतमस्तक हो गये और स्वयं भी उस सोपान पर चढ़ने की इच्छा करके उसके पास गये। पर उसी समय उनको ऐसा जान पड़ा कि अन्तरिक्ष में से कोई कह रहा है—"लूथर ! तुम किस भ्रमजाल में पड़े हो ! यह सब यहाँ के पंडे-पुजारियों की माया है।" बेचारे लूथर संकुचित होकर वापस चले आये।

इस प्रकार की दो-चार घटनाओं के फलस्वरूप और साधु-आश्रमों की लीलाओं को देखकर लूथर का अनन्य विश्वास अधिकांश में चूर-चूर हो गया। वे जिस भक्ति-भाव और श्रद्धा के साथ रोम में प्रविष्ट हुये थे और उसकी धूल को उन्होंने जिस प्रेम से मस्तक पर धारण किया था, रोम से चलते समय उसका चिन्ह भी नहीं रह गया। वरन् उनके मुख से ये उद्‌गार निकले—"इस पापपूर्ण रोम में कौन-कौन घृणित पापाचरण नहीं होते ! यह एक भयानक नारकीय भूमि है जहाँ पापों की ही सरिता प्रवाहित हो रही है।"

रोम से विटनबर्ग आकर वे अपने शिक्षण कार्य में फिर से लग गये। इस अवसर पर उनका जो भाषण हुआ वह इतना प्रभावशाली था कि सब लोग मुग्ध हो गये और 'इलेक्टर' (मुख्य व्यवस्थापक) तो इतना प्रसन्न हुआ कि उसने इनको डी० डी० (धर्माचार्य) की सर्वोच्च उपाधि देने का प्रस्ताव किया। लूथर ने कहा—"श्रीमान् ! इसके लिये आप किसी योग्य व्यक्ति को खोजिये। मैं इस योग्य कदापि नहीं हूँ।" पर लोगों ने माना और सर्वसम्मति से उनको डी० डी० की उपाधि प्रदान कर दी गई।

सन् १५१२ में लूथर को विटनबर्ग में "धार्मिक वक्ता" का पद दिया गया। उनका कार्य यह था कि बाइबिल की जो बातें यथार्थ हैं उनका उपदेश करें और पाखण्डियों ने जो भ्रमजाल फैला रखा है उसका खण्डन करें। लूथर ने एक वर्ष में ही इस काम को इतनी सफलता से पूरा किया कि अनेक सन्त-पुरुष उनके पास आने-जाने लगे। जब 'इलेक्टर' का एक मन्त्री बाहर गया तो लूथर को ही उसके स्थान पर काम करना पड़ा। इस समय वे 'संघों' का निरीक्षण करते थे। पर अब उनका काम बहुत बढ़ गया था और उन्होंने लिखा कि वह दो सहायकों के बिना पूरा नहीं हो सकता।

जिस समय लूथर इस प्रकार सत्य धर्मानुयायिओं की एक मंडली बना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रहे थे और धर्म का झण्डा ऊँचा करने में संलग्न थे, विटनवर्ग में महामारी फैल गई। मृत्यु-संख्या इतनी बढ़ गई कि अधिकांश नागरिक उस स्थान को छोड़कर बाहर चले गये। पर लूथर वहाँ से नहीं हटे। उन्होंने उस समय अपने एक मित्र को लिखा—"तुमने मुझे विटनबर्ग से हट जाने की सलाह दी है पर मैं अन्य लोगों के चले जाने पर भी यहीं पर ठहरा रहूँगा। मेरा 'धर्म-भाव' मुझे अपने कर्तव्य से हटने की सम्मति नहीं देता। जब तक परमपिता परमेश्वर मुझको नहीं बुलाता, तब तक मेरी कोई हानि नहीं हो सकती। मेरा आशय यह नहीं है कि मुझे मृत्यु से भय नहीं लगता, पर मेरा विश्वास है कि ईश्वर मेरी रक्षा करेगा।" अपने व्यवहार से लूथर ने यह सिद्ध कर दिया कि मनुष्य केवल पूजा-पाठ और धर्म-चर्चा कर लेने से सच्चा धार्मिक नहीं बन सकता, वरन् समय आने पर सेवा-कार्य द्वारा भी उसे अपने ईश्वर-भक्त होने का प्रमाण देना चाहिये।

अन्धविश्वासों का निराकरण—

अब वह समय आ पहुँचा कि लूथर धर्म के सत्य नियमों का प्रचार करके अन्धविश्वासों का खण्डन करें। उस समय यह कार्य बड़े दुस्साहस का का था क्योंकि 'धर्म' में जरा नुक्ताचीनी करने वाला व्यक्ति बड़े पादरियों की आज्ञा से तुरन्त अग्नि-कुण्ड में भस्मीभूत कर दिया जाता था। पर एक तो लूथर इस समय देश-प्रसिद्ध विद्वान् बन गये थे, स्वयं एक बहुत बड़े पादरी की पदवी को प्राप्त कर चुके थे और उनके अनेक अनुयायी और सहयोगी भी तैयार हो चुके थे, इसलिये उन्होंने तत्कालीन ईसाई धर्म में फैली अनेक कुप्रथाओं, अन्धविश्वासों और शकुन आदि की अत्यधिकता आदि का खण्डन करना आरम्भ किया। उनके उपदेश का सारांश यह था कि—जब मनुष्य को स्वयम् ही अपने भले और बुरे कर्मों का फल निश्चित रूप से भोगना पड़ता है, और कर्म-भोग कराने का यह कार्य परमेश्वर के सिवा और कोई कर नहीं सकता, तो फिर इतनी अन्ध-परम्पराओं को मानने की क्या आवश्यकता है? उद्धार का मार्ग तो यही है कि हम पाप-कर्मों से बचें और जो पाप-कृत्य अब तक बन पड़े हैं उनके लिये परमेश्वर से क्षमा मांगते रहें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस विषय की विशेष व्याख्या करने के लिये उसने शास्त्रार्थ के निमित्त ९९ विषय निर्धारित किये। इनमें धर्म सम्बन्धी अनेक भूलों का भी समावेश था। सबसे बड़ी बात यह कही गई थी कि मनुष्य अपने सत्कर्मों द्वारा स्वयं मुक्ति प्राप्त कर सकता है। पाठक देखें कि सत्य की खोज करने पर लूथर भारतीय-धर्म के मूल-तत्त्वों के समीप ही जा पहुँचे। अपने कर्मों का फल निश्चित रूप से पाना और अपनी मुक्ति का अधिकार अपने हाथ में होना हिंदू-धर्म का अटल सिद्धान्त है। यह बात दूसरी है कि लूथर के जमाने की तरह यहाँ भी पण्डा पुजारी और नकली साधु, लोगों को बहका कर 'साधु-संतों' की कृपा से ही धर्म और स्वर्ग प्राप्ति का सब्ज-बाग दिखलाया करते हैं। लूथर ने इस तरह के ढोंग का खण्डन किया और दो मुख्य सिद्धांतों को सर्वसाधारण के मार्गदर्शन के लिये प्रचारित किया—

(१) मनुष्य केवल धर्म-विश्वास रखने से धार्मिक नहीं बन जाता, जब वह धर्ममय होकर वैसे कर्म करता है तभी धार्मिक कहा जा सकता है।

(२) जबकि हम यह अच्छी तरह जानते हैं कि जो प्रभु ईसा में पूर्ण विश्वास रखता है उसके लिये कोई काम कठिन नहीं है, तब यह एक मिथ्या विश्वास है कि हम "सन्तों और महन्तों" की सहायता के इच्छुक रहें।

लूथर की इस प्रकार की शिक्षा से जहाँ सत्यानुरागी व्यक्ति उसके अनुयायी बनने लगे वहाँ ढोंगी और धर्म के नाम पर जनता को ठगने वालों में खलबली मच गई। ऐसे ढोंगी महन्तों के भक्त भी लूथर की निन्दा करने लगे। एक सभा में जब सेक्सनी के ड्यूक के सम्मुख लूथर ने अपने सिद्धान्तों का उपदेश दिया तो उसे ये बातें बड़ी बुरी जान पड़ीं। उसने अपने पास बैठी एक संभ्रान्त महिला से पूछा कि "यह शिक्षा कैसी है ?" महिला ने उत्तर दिया कि—"यदि मैं एक बार ऐसा व्याख्यानामृत पान कर सकूँ तो निश्चय ही संसार से शान्तिपूर्वक विदा हो सकूँगी।" यह उत्तर सुन कर ड्यूक हतप्रभ हो गया।

दैवयोग से वह महिला एक मास बाद ही बीमार हो गई और कुछ दिनों में उसकी में दशा मरणासन्न हो गई। लूथर की शिक्षा के अनुसार उसने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रभु ईसा से क्षमा प्रार्थना की और शान्तिपूर्वक परलोक के लिये प्रयाण किया।

'क्षमा-पत्रों' की बिक्री का विरोध—

पर अभी तक लूथर के हृदय में पोप के प्रति कोई विरोध-भाव नहीं था। वे धार्मिक भ्रष्टता के लिये पादरियों को व्यक्तिगत रूप से ही दोषी मानते थे। उस समय अपनी मानसिक अवस्था का वर्णन करते हुए स्वयं लूथर ने एक स्थान पर लिखा है—"मैं एक कट्टर 'पोपानुयायी' था। यदि मेरे सम्मुख कोई पोप का अपमान करता तो कदाचित् मैं उसके प्राणों का ग्राहक बन जाता।"

पर जब उन्होंने पोप की तरफ से जनता में 'क्षमा-पत्र' बिकते और उनके कारण लोगों में पाप की वृत्तियों को प्रोत्साहन मिलते देखा तो उनकी श्रद्धा को बड़ा धक्का लगा। एक दिन रास्ते में उन्होंने देखा कि लोगों का एक समूह अपने पापों का वर्णन कर रहा है और साथ ही यह भी कह रहा है कि अब हमको पाप-कर्मों से डरने की कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि श्रीमान टेटजिल से हमको पोप का "इण्डलजैंस" (क्षमा-पत्र) प्राप्त हो गया है। जब लूथर को यह सब रहस्य मालूम हुआ तो उसने लोगों को समझाया कि "तुम घोर अन्धकार में पड़े हो। प्रभु ईसा ने स्पष्ट कहा है कि केवल हृदय से पश्चात्ताप करने से ही तुम्हारे पाप मिट सकते हैं, नहीं तो तुम नष्ट हो जाओगे। धन देकर पापों से बचने की बात घोर नास्तिकता का लक्षण है।"

'इण्डलजैंस' (क्षमा-पत्र) का इतिहास बड़ा विचित्र है। सोलहवीं शताब्दी के आरम्भ में जब दशवाँ पोप, रोम के गिर्जाघर की गद्दी पर बैठा, तो उसने देखा कि गिर्जाघर की इमारत बहुत जर्जर हो गई है, उसका जीर्णोद्धार करना आवश्यक है। पर इस कार्य के लिये जितने धन की आवश्यकता थी उतना जल्दी मिल सकना सम्भव न था। इसलिये उन्होंने यह 'इण्डलजैंस' बेचने का उपाय निकाला। धन के सहारे पापों का दूर होना जानकर इन्द्रिय-परायण व्यक्तियों को बड़ी प्रसन्नता हुई और जनता में पाप-वृत्तियाँ पहले से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कहीं अधिक बढ़ने लगीं। 'क्षमा-पत्रों' की बिक्री के लिये अनेक देशों में कार्यालय स्थापित हो गये, जिनमें धूर्त लोग जनता को मूड़कर पोप को धन भेजने और स्वयं भी मजा उड़ाने लगे।

धन द्वारा समस्त पापों से उद्धार—

जर्मनी में इस कार्य का मुखिया टेटजिल नामक व्यक्ति बनाया गया। यह एक धूर्त और पापी व्यक्ति था और दुष्कर्मों के कारण सम्राट ने उसको प्राणदण्ड की आज्ञा दे दी थी। पर फिर कुछ लोगों के कहने-सुनने से वह छोड़ दिया गया। इसी समय जर्मनी के आर्कविशप के पास पोप का 'क्षमा-पत्र' बेचने का आदेश आया। उसने टेटजिल को इसके लिये उपयुक्त समझा। एक दिन देखा कि वही श्रीमान् टेटजिल एक सुन्दर गाड़ी में बैठकर एक भव्य जलूस के साथ राजपथ में होकर जा रहे हैं। अनेक पादरी और साधुनियाँ मशालें लेकर उनके इर्द-गिर्द चल रहे हैं और सुन्दर बाजा भी बज रहा है। इस प्रकार बड़ी शानशौकत के साथ टेटजिल गिर्जाघर में पहुँचे और वहाँ वेदी पर एक 'क्रास' गाड़कर भाषण करने लगे—

"भाइयो, ईश्वर-प्रदत्त वस्तुओं में यह 'क्षमा-पत्र' अमूल्य है। देखो! यह जो रक्तवर्ण 'क्रास' तुम्हारे सम्मुख गड़ा है इसकी उतनी ही शक्ति है जितनी कि मसीह के क्रास में थी। इसके गुण उससे कम नहीं हैं। मेरे निकट आओ। मैं तुमको 'पोप' की मुहर लगे पत्र दूँगा, जिसके द्वारा तुम्हारेभूतकाल के पाप ही नहीं वरन् भविष्य के पाप भी तुमको नरक की अग्नि में दग्ध नहीं कर सकेंगे। तुम्हारे पापों का इन सब पत्रों से ही अन्त हो जायगा। संसार में कोई ऐसा पाप नहीं है जिसे ये क्षमा-पत्र दूर न कर सकते हों। इनके गुणों का वर्णन कर सकना मानवीय शक्ति से बाहर है। ये अपना प्रभाव जीवित मनुष्यों पर ही नहीं किन्तु मरे हुए व्यक्तियों पर भी प्रदर्शित करते हैं। देखो! तुम्हारे पूर्वजों की आत्माएँ नरक में पड़ी तड़प रही हैं। जरा उनके चिल्लाने की ओर ध्यान दो। हाय-हाय, वे कह रही हैं कि थोड़े दान द्वारा हमारी रक्षा क्यों नहीं करते हो? हा! मुझसे अब उनका कष्ट सहन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नहीं हो सकता। वह धन किस काम का जिससे हम पीड़ितों की रक्षा न कर सकें। लो, अब मुझसे नहीं रहा जाता है।"

यह कहकर टेटजिल ने कुछ सिक्के संदूकची में छोड़े और इसके उपरांत फिर कहना आरम्भ किया—"अरे, मनुष्य के रूप में विवेकहीन पशुओ! क्या तुमको सूझता नहीं कि ऐसे अमूल्य रत्न को पाकर उसे मिट्टी समझ कर त्याग कर रहे हो। मूर्खो! ईश्वर की इस कृपा का क्यों तिरस्कार कर रहे हो? क्यों नहीं अपने पूर्वजों की आत्माओं को शान्ति देते हो? क्या तुम सब इस धन को छाती पर रखकर ले जाओगे? तुम लोगों को चाहिये कि बढ़िया वस्त्रों की जगह सामान्य वस्त्र भले ही धारण करो पर इस समय धन का लोभ न करो। देखो, मैं थोड़े से धन का दान करने से ही तुम्हारे पूर्वजों को उबार सकता हूँ, अब इस क्षमा-पत्र को लेने में देर न करो।"

मूर्ख जनता इन बातों को सुनकर गद्‌गद हो गई कि दयालु पोप ने हमारे उद्धार के लिये कैसी सुगम विधि बताई है। बस वे धड़ाधड़ क्षमा-पत्र खरीदने लगे। पत्र देते हुए टेटजिल कहने लगा—"भाइयो! पीटर और पाल ने तुम्हारे धर्म के लिये क्या नहीं किया? जिन्होंने अपने प्राणों की भी परवाह न करके तुम्हारे पवित्र धर्म की रक्षा की। हाय! आज उन्हीं के पुनीत शरीर कीचड़ और धूल में पड़कर तिरस्कृत हो रहे हैं। सेण्टपीटर तथा सेण्टपाल के गिर्जा भग्नावशेष हो गये हैं। उनका पुनर्निर्माण आवश्यक है। इसी कार्य के लिये यह धन एकत्रित किया जा रहा है।" धार्मिक ईसाइयों पर इस कथन का बड़ा प्रभाव पड़ा। अन्त में "धन लाओ—धन लाओ—धन लाओ" की आवाज लगाकर टेटजिल ने अपना 'उपदेश' समाप्त कर दिया।

धर्म के नाम पर ढोंग की पराकाष्ठा—

अब लोग सन्दूक की तरफ झुके और उसमें धन डालकर 'क्षमा-पत्र' खरीदने लगे। खरीदते समय अपने पाप का भी वर्णन करना पड़ता था। भिन्न-भिन्न पापों के लिये भिन्न-भिन्न मूल्य नियत किया गया गया था। उदाहरणार्थ बहु-विवाह के लिये ३०), चोरी के लिये ४५), किसी को मार डालने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के लिये ८०) देने पड़ते थे। दान देने के पश्चात् जो क्षमा-पत्र दिया जाता था उसका भावार्थ इस प्रकार था—

"प्रभु ईसा मसीह ही तेरे ऊपर कृपा करके तेरे पापों को अपनी परम-पवित्र शक्ति से क्षमा करते हैं। और मैं धर्म-शक्ति के प्रभाव से, जो मुझको प्रदान की गई है, तुझको तेरे दुष्कर्मों से, जो तुझसे हुए हों मुक्ति देता हूँ। तेरे पाप चाहे जैसे नीचातिनीच और घोरातिघोर क्यों न हों उन सबसे मैं तुझे छुड़ाता हूँ। उन पाप-कर्मों द्वारा तुझमें जो लज्जा और निर्बलता आ गई है, उसको भी मैं दूर करता हूँ। इसके अतिरिक्त अन्धकारमय नरक में जो कष्ट तुझे भोगने होंगे उनको भी अभी से दूर किये देता हूँ। सम्प्रति मैं तुझे पुनः संस्कृत कर तेरे लिये सदा के निमित्त नरक के पट बन्द किये देता हूँ और स्वर्ग का द्वार खोले देता हूँ। यदि तेरा जीवन अभी बहुत समय के लिये शेष है तो भी यह कृपा तेरे मृत्यु-काल तक न बदलेगी। पिता, पुत्र तथा पवित्र आत्मा के नाम पर—आमीन !!"

इस प्रकार का ढोंग रचकर टेटजिल ने न मालूम कितने मूर्खों को ठगा। पाठक मन में कहते होंगे कि लोग इन झूँठी बातों में कैसे फँस गये? पर उस समय तो योरोप में भी विद्या, शिक्षा का प्रचार इतना कम हुआ था कि लोग धूर्तों की चमकीली पोशाकों और चिकनी-चुपड़ी बातों पर जल्दी ही विश्वास कर लेते थे। पर हम पूछते हैं कि इस बीसवीं शताब्दी में, जब कि विज्ञान का सूर्य चमक रहा है और जल-थल-नभ में सर्वत्र मनुष्य का प्रभुत्त्व स्थापित हो गया है, क्या धर्म के नाम पर ऐसे ठगी के कारनामे कम होते हैं?

वर्तमान समय में 'आगाखाँ' का नाम मशहूर है। वैसे तो वे घुड़दौड़ का धन्धा करते हैं, पर परम्परागत रूप से वे 'आगाखानी' या 'इस्माईली' धर्म के गुरु भी हैं। उनके लाखों शिष्य हैं जिनमें सब मुसलमान ही नहीं वरन् हजारों हिन्दू भी हैं। ये लोग 'आगा खाँ' को भगवान का अवतार मानते हैं और उनका विश्वास है कि आगा खाँ की उपासना के फल से उनका स्वर्ग में जाना तो निश्चित ही है। अब स्वर्ग में पहुँचने पर उनको वहाँ रहने-सहने की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अच्छी सुविधायें मिलें, रहने का घर उनकी इच्छानुकूल हो, इसके लिये वे आगा खाँ से प्रार्थना करते हैं। इस पर आगा खाँ जैसा और जितना बड़ा मकान वे स्वर्ग में चाहते हों उसकी कीमत लेकर स्वर्ग के व्यवस्थापक जिब्राईल नामक फरिश्ते को एक पत्र लिख देते हैं कि अमुक महाशय को इस प्रकार का मकान स्वर्ग में दिया जाय ! वह पत्र मरने के पश्चात् उनकी लाश के साथ ही कब्र में गाड़ दिया जाता है और उन लोगों को दृढ़ विश्वास होता है कि स्वर्ग में पहुंच कर वे निश्चय ही वैसा मकान पा जायेंगे !

पाठक इन बातों को हँसी-मजाक की चीज न समझें। बम्बई में रहने वाले 'आगाखानी' जिनमें अधिकांश बोहरा जाति के हैं, इसी उद्देश्य से लाखों रुपया प्रति वर्ष आगा खाँ को देते रहते हैं। इसी आमदनी से उन्होंने योरोप के कई देशों, जैसे इङ्गलैंड, फ्रांस, इटली, स्विटजरलैंड आदि में, अपने निवास के लिये एक-एक महल बना रखा है और वहीं की एक-एक स्त्री को पत्नी बनाकर उसमें रखा हुआ है। उनके अनुयायिओं को स्वर्ग में मकान मिलेगा या नहीं, यह तो अनिश्चित है, पर उनसे दक्षिणा लेकर आगाखां के लिये महल अवश्य बन गये !

पण्डा-पुरोहितों की ठग-लीला--

पर हम ईसाई और मुसलमानों को ही ऐसी ठगी और हास्यास्पद प्रथाओं के लिये दोषी क्यों समझें ? क्या हमारे हिन्दू समाज में लोगों के पितरों का नर्क अथवा प्रेतयोनि से उद्धार करने के लिये गया के पण्डा सैकड़ों रुपये की दक्षिणा बसूल नहीं करते ? क्या हमारे भाई इस विश्वास के साथ किसी पण्डा-पुरोहित को मरते समय गौदान नहीं करते कि वह गाय यमलोक में उनको वैतरणी नदी से पार करने के लिये पहुँच जायगी ? क्या हम अपने सम्बन्धियों के मरने के बाद महाब्राह्मण को खाना, कपड़ा बर्तन, बिस्तर चारपाई आदि समस्त जीवनोपयोगी वस्तुएँ इस विचार से दान नहीं करते कि यह तमाम सामग्री मृत व्यक्ति को परलोक में प्राप्त हो जायगी और इसे पाकर वे सुविधापूर्वक जीवन निर्वाह कर सकेंगे ?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस सबका मुख्य कारण यही है कि सीधे-साधे लोगों को बहका कर अपना उल्लू सीधा करने वाले 'धर्मजीवी' व्यक्ति प्रत्येक मजहब और समाज में पाये जाते हैं। ऋषियों और अन्य महापुरुषों ने विविध मजहबों की स्थापना इस उद्देश्य से की कि उनकी आगामी पीढ़ियाँ केवल भौतिकता (पेट भरने और सन्तानोत्पादन) में ही न फसी रहें वरन् ईश्वर और आत्मा के प्रति भी अपना कर्तव्य पालन करें। पर बाद में धूर्तों ने उनके उपदेशों को तोड़-मरोड़ कर लोगों को गुमराह करके रुपया बसूल करने का साधन निकाल लिया। इससे सर्वसाधारण का नैतिक पतन होने लगता है और वे भ्रष्टाचार को ही धर्म मानने लगते हैं। हमारे देश में 'वाम-मार्ग' का प्रचार और योरोप में 'पोप' के कारनामें इसके स्पष्ट उदाहरण हैं।

जब यह धर्म-ग्लानि अथवा भ्रष्टाचार बहुत अधिक बढ़ जाता है और मानवता के लिये एक संकट रूप में सिद्ध होने लगता है तो दैवी प्रेरणा से कोई महापुरुष उसका सुधार करने को अग्रसर होता है। स्वार्थी लोगों के विरोध के कारण उसे अवश्य ही काँटों पर चलना पड़ता है, अपने प्राण संकट में डालने पड़ते हैं, पर अन्त में सत्य के सम्मुख असत्य का—सदाचार की शक्ति के सामने दुराचार का पराभव होता ही है। हमारे देश में शङ्कराचार्य और योरोप में मार्टिन लूथर इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं, जिन्होंने प्राणान्तक सङ्कट सहन करके भी धर्म-सुधार का काम सम्पन्न किया।

चाहे अपने जीवन काल में विरोध और संघर्ष के कारण लोग ऐसे महा-मानवों का पूरा मूल्यांकन न कर सकें, पर समय आता है जब वे उनके वास्तविक महत्त्व को अनुभव करते हैं और उनको एक आदर्श मनुष्य ही नहीं दैवी विभूति के रूप में पूजने लगते हैं। फिर काल प्रभाव से उन महा-पुरुषों के सुधार कार्य में भी विकृति उत्पन्न होने लगती है, स्वार्थपरायण और चालाक व्यक्ति उनमें भी घुसकर अपना जाल फैलाने लगते हैं। तब फिर धर्म-मार्ग के संशोधन के लिये नवीन 'महान आत्माओं' की आवश्यकता उपस्थित हो जाती है। यही 'धर्म-स्थापना' का सनातन क्रम है, जिसकी व्याख्या भगवान कृष्ण ने भी 'गीता' में की है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

'पोपानुयायियों' से संघर्ष--

जब इन घटनाओं का समाचार लूथर ने सुना तो इस प्रकार 'धर्म का उपहास' उसे असह्य जान पड़ने लगा। कितने ही लोग 'क्षमा-पत्रों' की आड़ में मनमाने कुकृत्य करने लगे थे और ढोंगियों के सामने सज्जन लोगों का मान घटता जाता था। उसने क्षमा-पत्रों की निस्सारता का भण्डाफोड़ करना आरम्भ किया जिससे टेटजिल की आमदनी घटने लगी। लूथर के प्रभावशाली भाषणों से वह भयभीत होने लगा। उसने अन्य 'महन्तों' से मिलकर सलाह की और अपने भाषणों में घोषणा करने लगा कि—"जो व्यक्ति नास्तिक हैं, जो व्यक्ति प्रभु ईसा के प्रतिनिधि' पोप की आज्ञा का उल्लंघन करेंगे उनको जीवित ही जला दिया जायगा।" उसने सचमुच ही कई स्थानों पर भाषण के अवसर पर अग्नि प्रज्वलित कराई और सुधारवादियों को तरह-तरह से आतंकित करने लगा।

पर लूथर तो सत्यानुयायी था, वह पोपानुयायियों की धींगाधींगी को देखकर कैसे चुप रहता। वह टेटजिल के 'क्षमा-प्रदान' वाले कार्य के विरुद्ध जोरों से प्रचार करने लगा। उसका भाषण छपा कर जनता में बाँटा गया जिसका बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। सन् १५१७ में उसने अपनी एक प्रचार-सभा में ९५ वाक्य लिखकर टाँग दिये जिनका नाम 'थीसिस' पड़ गया। लूथर ने कहा कि इनके सम्बन्ध में जिस किसी को शङ्का हो वह कल यहाँ आकर शङ्का-समाधान कर सकता है। पर कोई भी उसके लिये प्रस्तुत न हुआ।

इन वाक्यों का जनता पर बहुत प्रभाव पड़ा और उनका प्रचार बढ़ने लगा। उनका योरोप की अन्य भाषाओं में भी अनुवाद किया गया और कुछ ही सप्ताह में वे रोम तक फैल गये। कुछ सच्चे पादरी भी उनके पक्ष में थे। उनमें से एक ने कहा—"इतने दिन बाद मुझे वह व्यक्ति मिल गया जैसा मैं चाहता था।" जर्मनी के सम्राट मैक्समिलियन ने उनको पढ़कर अपने एक अधिकारी को लिखा कि—"इस बात को ध्यान में रखो कि एक दिन हमको लूथर की आवश्यकता पड़ेगी।" उनका आशय यही था कि पोप जिस प्रकार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनमानी कार्यवाहियाँ करता है, वे अधिक समय तक नहीं चल सकतीं। जब उससे हमारा विरोध होगा तो लूथर जैसा निष्पक्ष विद्वान ही उसे निरुत्तर कर सकेगा।

पर एक तरफ जहाँ लूथर की प्रशंसा हो रही थी वहाँ दूसरी ओर उसके विरोधी उसे नष्ट करने का प्रयत्न कर रहे थे। विश्वविद्यालय के एक अध्यापक ने उससे कहा—"मित्र, जाओ अपनी कुटी में छिपकर बैठो, ईश्वर इस समय तुम्हारे ऊपर दया करे।" लूथर अपने प्रचार कार्य में लगा रहा पर कुछ समय बाद उसे अपने मित्र की चेतावनी सच होती जान पड़ी। उससे मौखिक सहानुभूति दिखाने वाले तो बहुत मिले, पर पोप के विरुद्ध कार्यरूप में सहयोग देने वाला एक भी न मिला। लूथर ने देखा कि पोप का विरोध करने वाला मैं अकेला ही हूँ और समस्त 'क्रिश्चियन चर्च' मेरे विरुद्ध है। इससे उसका उत्साह और साहस घटने लगा। वह सोचने लगा कि 'अकेला चना कैसे भाड़ को फोड़ सकता है?'

अब टेटजिल की चढ़ बनी और उसने घोषणा की कि वह लूथर के व्याख्यानों का खण्डन करेगा। जब लूथर के साथ उसका शास्त्रार्थ हुआ तो तीन सौ पादरियों का समुदाय उसके निरीक्षण को एकत्रित था। लूथर ने वाक्यों का पूरी तरह समर्थन किया पर पोप के भय और अपने स्वार्थ के कारण कोई पादरी उसका पक्ष ग्रहण न कर सका और टेटजिल को ही विजयी घोषित कर दिया गया। टेटजिल ने एक 'फाँसी' गाड़कर उस पर लूथर की पुस्तक को लटका दिया और फिर उसे जला दिया। उसने यह भी कहा कि—"वह नास्तिक भी इसी तरह जला दिया जाय तो ठीक रहेगा।"

लूथर को मृत्यु-दण्ड की धमकी---

टेटजिल ने भी लूथर के मुकाबले में अपनी 'वाक्य-पुस्तक' छपवाई और उसे प्रचारार्थ लूथर के निवास स्थान 'विटनबर्ग' को भेजा। पर वहाँ लूथर के युवक शिष्यों ने उसके 'प्रचारक' को बहुत तंग किया और उस पुस्तक की वही गति की जो टेटजिल द्वारा लूथर की पुस्तक की हुई थी। इसके पश्चात्

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रोम नगरी के 'सेन्सर' ने जिसका कार्य पुस्तकों का निरीक्षण करके यह सम्मति देना था कि वह कैथलिक सम्प्रदाय वालों के पढ़ने योग्य है अथवा नहीं, स्वयं एक पुस्तक प्रकाशित कराई जिसमें लूथर के सिद्धान्तों का बड़े जोर से खण्डन किया गया था। यह पुस्तक 'पोप' को ही समर्पित की गई थी। लूथर ने उसका प्रतिवाद करते हुए ईसाई धर्म के एक महान आचार्य सेण्ट आगस्टाइन का यह वाक्य उद्धृत किया—

"मैं केवल ईश्वरीय धर्म-पुस्तक (बाइबिल) पर विश्वास करता हूँ और मेरी मान्यता है कि वही भूल और भ्रम से रहित है। दूसरे लोगों की शिक्षाओं पर, जो अपने मन की बात कहते हैं मेरा विश्वास नहीं है।"

लूथर ने 'सेन्सर' का खण्डन करते हुए यह भी लिखा—"क्या तुम रक्त के प्यासे हो? यदि ऐसा है तो मुझे इसकी तनिक भी चिन्ता नहीं। क्या हानि है धर्म के लिये मेरा जीवन नष्ट हो जाय। प्रभु ईसा मेरी सदा रक्षा करेंगे।" कोलोन के एक धर्म-अधिकारी ने जब इस प्रतिवाद को देखा तो वह बड़ा क्रोधित हुआ और कहा—"चर्च के विरुद्ध इस षड्यन्त्र की अब हद हो चुकी। ऐसे 'नास्तिक' को अब घडी भर भी जीवित नहीं रहने देना चाहिये।" एक बड़े बिशप (ईसाई महन्त) ने भी उसका समर्थन करते हुए कहा—"मुझे जब तक चैन नहीं पड़ेगा जब तक लूथर भस्मीभूत न कर दिया जायगा।"

इसके कुछ समय पश्चात् लूथर आगस्टाइन पादरियों के एक बड़े सम्मेलन में बुलाया गया। लूथर के मित्रों ने उसे वहाँ जाने से रोका तो उसने उत्तर दिया—"मैं धर्म पर दृढ़ हूँ अतः मुझे मृत्यु का भय नहीं।" सम्मेलन में पाँच विद्वान् सम्मिलित रूप से लूथर की पुस्तक की आलोचना करने लगे। पर उसने ऐसी शान्ति और गम्भीरता से उनके तर्कों का उत्तर दिया कि समस्त सभा चकित रह गई। सभाध्यक्ष तो इतना प्रसन्न हुआ कि उसने एक गाड़ी मँगा कर और उसमें बैठाकर लूथर को 'विटनबर्ग' भेजा। सम्मेलन में उपस्थित पैलिस्टाइन के काउण्ट ने विटनबर्ग के 'इलेक्टर' को लिखा—

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

"शास्त्रार्थ में लूथर ने जिस बुद्धिमत्ता का परिचय दिया है, उससे विश्वविद्यालय का गौरव बहुत बढ़ गया है।"

लूथर पर मुकदमा—

अब लूथर ने "सौल्यूशन्स" नाम की पुस्तक लिखी जिसमें अपनी 'वाक्य-पुस्तक' की व्याख्या की गई। उन्होंने 'पोप' को एक पत्र भी लिखा जिसमें इस विषय में 'न्याय' की प्रार्थना की गई। पर इसका परिणाम उल्टा ही हुआ। लूथर पर 'कैथलिक चर्च' के विरोध का अभियोग लगाया गया और निर्णय के लिये उसी 'सेन्सर' को जज बनाया गया जिससे उनका विवाद चल रहा था। यह स्थिति देख कर लूथर के मित्र बड़ी चिन्ता में पड़ गये कि यदि लूथर रोम जाते हैं तो उनका जीवित लौट सकना सम्भव नहीं और यदि वे जाने से इनकार करते हैं तो पोप की आज्ञा उल्लंघन करने के अपराधी बनते हैं। इसलिये उन्होंने पोप की सेवा में एक प्रार्थना-पत्र भेजा। उसी समय जर्मनी के एक बड़े पादरी 'कैजीटन' ने पोप को "जर्मनी से नास्तिकता के उच्छेद" के सम्बन्ध में एक पत्र लिखा। पोप ने इस कार्य के लिये उन्हीं को 'संचालक' नियुक्त कर दिया। इस प्रकार लूथर का मुकदमा भी उन्हीं के हाथ में आ गया।

अब लूथर को इस मुकदमे के लिये 'आग्सबर्ग' बुलाया गया। पर वहाँ के 'काउण्ट' (जागीरदार) ने सूचित किया कि यहाँ के कुछ लोगों ने शपथपूर्वक प्रतिज्ञा की है कि वे लूथर को देखते ही खत्म कर देंगे। फिर भी लूथर भयभीत नहीं हुए और नियत समय पर 'आग्सवर्ग' पहुंच गये। जब 'कार्डिनल' (धर्माध्यक्ष) से उनकी भेंट हुई तो उन्होंने साष्टाङ्ग प्रणाम करके कहा—"मेरे ऊपर जो अभियोग लगाया गया है, उसे सुनने को मैं प्रस्तुत हूँ।"

कार्डिनल—"अच्छा हो कि तुम अपनी 'वाक्य-पुस्तक' को नष्ट कर दो और भविष्य में ऐसा कार्य न करने की प्रतिज्ञा करो। इतना करने पर तुम छोड़ दिये जाओगे।"

जब लूथर ने 'पोप' के पत्र को दिखाने के लिये कहा तो कार्डिनल ने उत्तर दिया—"बेटा, तुम्हारी यह इच्छा पूरी नहीं की जा सकती। तुमको

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपनी भूल स्वीकार करनी होगी और आगे ऐसा न करने की प्रतिज्ञा करनी पड़ेगी।"

लूथर—"कृपा कर यह बतलाइये कि उसमें कहाँ-कहाँ भूलें हैं। मैं उनको समझ जाऊँगा तो अवश्य आपकी आज्ञा शिरोधार्य करूँगा।"

कार्डिनल—"हम तुमसे विवाद करना नहीं चाहते। या तो दण्ड स्वीकार करो या पुस्तक को नष्ट करो!"

कार्डिनल ने लूथर से यह भी कहा कि "यदि तुम रोम जाना चाहो तो हम तुमको वहाँ सुरक्षित भेज सकते हैं।" पर लूथर विवाद बढ़ाना उचित न समझ कर उस समय वहाँ से चला आया। तब उसके एक मित्र ने सलाह दी कि कार्डिनल से मिलने के बजाय पत्र-व्यवहार द्वारा बातचीत करो। लूथर ने ऐसा ही किया। पत्र द्वारा भी कार्डिनल ने वही आदेश दिया जो उसने मौखिक रूप से दिया था। जब लूथर ने उसका विरोध किया तो कार्डिनल ने बिगड़ कर कहा कि—"यदि तुम नहीं मानोगे तो मैं तुमको रोम भेज देता हूँ, और जातिच्युत तो मैं तुमको अभी किये देता हूँ।" अब लूथर ने अपने मित्रों की सलाह से आग्सबर्ग में ठहरना हानिकारक समझा और चुपचाप विटनबर्ग वापस चला आया।

अपने आदेश की इस प्रकार अवमानना होते देख कर कार्डिनल के क्रोध का पारा बहुत चढ़ गया। उसने विटनबर्ग के 'इलेक्टर' (शासक) को पत्र लिखा कि या तो लूथर को रोम भेज दीजिये या उसे अपने राज्य से निर्वासित कर दीजिये। 'इलेक्टर' ने उस पत्र की एक प्रति लूथर के पास भेज दी। इस पत्र का उसने जो उत्तर दिया वह इतना उच्च विचारों से परिपूर्ण था कि 'इलेक्टर' पूर्ण सन्तुष्ट हो गये और उन्होंने कार्डिनल की दोनों बातों को अस्वीकार कर दिया।

इसी समय पोप के प्रतिनिधि टेटजिल पर, जो लूथर का प्रतिद्वन्द्वी था, गबन का मुकदमा चलाया गया। उसमें साबित हुआ कि उसने 'क्षमा-पत्रों' को बेच कर जो रुपया प्राप्त किया है उसका एक बड़ा भाग वह स्वयं दबा बैठा है। इस मुकदमे का भय उस पर ऐसा सवार हुआ कि वह बीमार पड़

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गया और शीघ्र ही उसका देहान्त हो गया। अन्तिम समय में लूथर ने उसके सब दोषों को भुला कर उसे एक अत्यन्त करुणायुक्त पत्र भेजा।

लूथर पर प्राण-संकट और उसकी रक्षा---

पर धर्म के नाम पर ढोंग करने वाले व्यक्ति प्रत्यक्ष पाप करने वालों की अपेक्षा भी अधिक भयंकर होते हैं। वे स्वाभाविक धर्म की बातों से वैसे ही घबडाते हैं जैसे सूर्य के प्रकाश से उल्लू। लूथर की सच्ची धर्म-व्याख्या से धर्म का दम्भ करने वाले पदवीधारी उसी प्रकार भड़कते रहे और तरह-तरह से उसे हानि पहुँचाने की चेष्टा करते रहे। एक दिन वे कहीं जा रहे थे तो एक युवा पुरुष ने उन पर पिस्तौल तान कर कहा—"तुम अकेले कैसे घूम रहे हो?" लूथर बोले—"मनुष्य मेरा क्या कर सकता है, जब परमेश्वर रक्षक है।" एक अन्य 'पोपानुयायी' ने विटनबर्ग के शासक को इटली से पत्र भेजा कि "आप लूथर की रक्षा करने से हाथ खींच लीजिये, जिससे हमको दस हजार क्राउन (जर्मनी का रुपया) प्राप्त करने का अवसर मिल सके।" इस पत्र से यह भेद खुला कि पोप के अधिकारियों की तरफ से लूथर को मारने या पकड़ कर लाने के लिये दस हजार क्राउन के पुरस्कार की घोषणा की गई थी।

जब विटनबर्ग के शासक ने लूथर को इस प्रकार से संकटग्रस्त देखा और जर्मनी का नया शासक चार्ल्स भी उससे विरुद्ध आदेश प्रकाशित करने लगा तो 'इलेक्टर' ने गुप्त रीति से पाँच व्यक्ति भेज कर उनको गिरफ्तार करा लिया। लूथर के इस प्रकार गायब हो जाने से जनता में बड़ी सनसनी फैल गई। पर 'इलेक्टर' ने उनको सुरक्षापूर्वक तब तक अपने दुर्ग में बन्द रखा जब तक उनके विरोधी लोगों का जोर-शोर ठण्डा न पड़ गया। जेलखाने में लूथर ने 'बाइबिल' का अनुवाद जर्मन भाषा में किया जिससे सर्वसाधारण उसे स्वयं पढ़ और समझ सकें। दो वर्ष बाद जेलखाने से बाहर आकर लूथर ने उसे छपाया और जनता में तेजी से उसका प्रचार होने लगा। यह देख कर पोप की तरफ से उन पुस्तकों को 'धर्मविरुद्ध' कहकर जलवाया जाने लगा। इसी बीच इङ्गलैंड के राजा हेनरी आठवें ने भी लूथर के सिद्धान्तों के खण्डन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में एक पुस्तक छपाई। जब लूथर ने उसका उत्तर दिया तो हेनरी बड़ा रुष्ट हुआ और उसने विटनवर्ग के शासक को लिखा कि वह लूथर को खूब सतावे।

धर्म के नाम पर राक्षसी कृत्य---

लूथर पर तो इस आज्ञा का प्रभाव अधिक न पड़ा पर धर्माधिकारी और सरकारी कर्मचारी उसके अनुयायिओं को खूब कष्ट देने लगे। इस प्रकार अन्त में धर्मोन्माद ने अपना नग्न रूप प्रकट किया। जहाँ धर्म का लक्षण पतितों को भी शुद्ध बना देना कहा गया है, वहाँ रोम के पोप की तरफ से जर्मनी में ईसा की आज्ञाओं का स्वतन्त्र रूप से पालन करने के अपराध में निर्दोष व्यक्तियों का वध किया गया। इस पर भी आश्चर्य यह था कि दोनों ही दल अपने को एक ही धर्म-ग्रन्थ 'बाइबिल' का अनुयायी और प्रभु ईसा के उपासक बतलाते थे। इस प्रकार के सारहीन और मूर्खतापूर्ण धार्मिक झगड़ों से भारतवर्ष का धर्म-इतिहास भी भरा पड़ा है। बौद्ध, जैन, शैव, वैष्णव, शाक्त आदि के हिंसापूर्ण संघर्ष सैकड़ों वर्ष तक चलते रहे हैं और उनमें अनगिनती निर्दोष व्यक्ति मारे गये हैं।

लूथर के जीवन-वृतान्त से हम सबसे बड़ी शिक्षा यही ग्रहण कर करते हैं कि जो लोग 'धर्म' को झगड़े और उत्पीड़न का साधन बनाते हैं, वे ही उसके सबसे बड़े शत्रु हैं। चाहे वे त्रिपुण्ड लगाये हुए हों, तुलसी की माला धारण किये हों, भैरोजी की भस्मी का टीका लगाये हों या देवीजी का रक्त-चन्दन। पर जो सम्प्रदाय अपने अनुयायिओं को यह उपदेश नहीं देता कि धर्म का सर्वप्रथम सिद्धान्त बिना धर्म और मजहब का विचार किये दुखियों की सेवा और भूले-भटकों को प्रेमपूर्वक सही मार्ग दिखलाना है, वह 'धर्म' नाम का अधिकारी नहीं हो सकता। धर्म इसका भी नाम नहीं है कि जो व्यक्ति धार्मिक उपासना या क्रियाकाण्ड के सम्बन्ध में हमसे भिन्नता रखता हो उसे हम अपना शत्रु समझ लें और उसका नाश करने को तैयार हो जाँय।

ऐसे ही मूर्खतापूर्ण या स्वार्थपरक कार्यों का यह परिणाम हुआ कि बहुसंख्यक व्यक्ति 'धर्म' शब्द के ही विरोधी बन बैठे और उसे "जनता के लिये अफीम" की उपमा देने लगे। उनके कथन का आशय यही था कि चालाक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और सत्ताधारी व्यक्ति सर्वसाधारण पर बनावटी 'धर्म' का नशा चढ़ाकर उनके द्वारा हर तरह के अनर्थ करा सकते और अपना मतलब निकाल सकते हैं। योरोप में पोप और अपने देश में बौद्ध-शैवों के रक्तरंजित संघर्ष और वाममार्गी तथा कृष्णजी की नकल करने वाले गुँसाइयों के दुराचारों का वर्णन पढ़ने से विदित होता है कि यह मनुष्य रूपधारी "शैतान" ज्ञान, वेदान्त और भक्ति के उच्च आदर्शों को जानता और दूसरों को उनका उपदेश करता हुआ भी कितना क्रूर और पतित हो सकता है। इससे कहीं अच्छा है कि हम धार्मिकता और नैतिकता के दस-पाँच मुख्य और स्पष्ट नियमों को ही जाने और उनका सचाई के साथ पालन करें। भगवान किसी की विद्वता और शास्त्र-ज्ञान की परीक्षा लेकर उसे सद्गति का उत्तराधिकारी नहीं बनाते, वरन् वे केवल उसके सत्कर्म और सच्चरित्रता को देखते हैं।

ईसाई धर्म का सुधार—

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लूथर का समस्त जीवन (मृत्यु १५४६) इसी प्रकार धर्मध्वजियों और पाखण्डियों से संघर्ष करने में व्यतीत हुआ। धर्माधिकारी और सत्ताधिकारियों ने उसे दबाने और सत्य-धर्म-सिद्धान्तों से हटाकर अपना अनुयायी बनाने की बहुत चेष्टा की और अन्तिम समय तक उसे तरह-तरह से कष्ट देने का प्रयत्न करते रहे, पर वह लक्ष्य पर सुदृढ़ बना रहा। अपने जीवन काल में ही उसने उस 'प्रोटेस्टेण्ट' सम्प्रदाय की नींव डाल दी जो शीघ्र ही योरोप के अनेक देशों में धार्मिक-सुधारों का अग्रगामी दल सिद्ध हुआ। आज समस्त इङ्गलैंड और जर्मनी प्रोटेस्टेण्ट ही हैं और अमरीका आदि अन्य देशों में भी उसके अनुयायिओं की काफी संख्या है।

लूथर के प्रयत्नों का सर्वोत्तम फल यह हुआ कि समय आने पर रोम के 'पोपों' ने भी वास्तविकता को स्वीकार किया और अपने दोषों को दूर करके मानव-सेवा को ही अपना ध्येय बना लिया। आज रोम में पोप की गद्दी पर जो व्यक्ति आसीन होते हैं वे प्रायः सन्त-प्रकृति के होते हैं और रोमन कैथलिक मिशन की तरफ से संसार भर में सबसे अधिक अस्पताल, स्कूल तथा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गरीबों की सहायता के अन्य कार्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं। यह सब महापुरुष लूथर के उद्योग तथा आत्म-त्याग का परिणाम है।

हमारे देश में भी सुधारकों की कमी नहीं है और पिछले डेढ़ सौ वर्षों में राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, स्वामी दयानन्द, महादेव गोविन्द रानाडे आदि ऐसे कितने ही समाज-सुधारक उत्पन्न हो चुके हैं, जिनका प्रभाव भारतवासियों पर वर्षों तक रहेगा। महात्मा गाँधी राजनीतिक नेता होने के साथ ही बहुत बड़े समाज-सुधारक भी थे और प्राचीन सुधारकों के कार्यक्रमों को अधिकांश में उन्हीं ने कार्यरूप में परिणित कराया। पर वर्तमान समय में हमको अपने देश में इस प्रकार के किसी सच्चे और प्रभावशाली सुधारक का अभाव ही जान पड़ रहा है। छोटी-छोटी जातियों के भेद, दहेज-प्रथा की भयंकरता, विवाह तथा अन्य रस्मों की जाने वाली फिजूलखर्ची, अपात्रों को दिये जाने वाले दान में धन की बर्बादी आदि अनेक गम्भीर समस्यायें हिन्दू-जाति की जड़ पर कुठाराघात कर रही हैं, पर कोई ऐसा महामानव सामने नहीं आया जो जन-समुदाय को क्रियात्मक रूप से इनको मिटाने की प्रेरणा दे सके। लूथर अपने देश में फैली सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध अकेला ही उठ खड़ा हुआ और उसने अपने स्वार्थ-त्याग तथा निर्भयता के द्वारा अन्त में उनको जड़मूल से उखाड़ दिया। उसके इन्हीं गुणों को देखकर एक भारतीय लेखक ने कहा है—

"लूथर रिफार्मेशन (सुधार) का पिता था। उसने योरोप में एक नवीन विचारधारा को जन्म दिया। उसकी उत्पन्न की हुई धार्मिक-क्रांति आग की तरह ईसाई-जगत में फैल गई। इस क्रांति से करोड़ों पददलित व्यक्तियों का उद्धार हुआ। वे लोग जो अपने को सदा पापग्रस्त तथा दीन-हीन मानते थे उन्हें भी अपनी मोक्ष का मार्ग दिखाई देने लगा।"

सच्चे सुधारक का यही लक्षण है। अगर हमारे देश में सुधार के अभिलाषी सच्चे हृदय से संगठित होकर सामाजिक और धार्मिक कुप्रथाओं को मिटाने के लिये खड़े हो जायें तो हिन्दू-जाति का उद्धार होने में देर न लगे।

युग-निर्माण प्रेस, गायत्री तपोभूमि, मथुरा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

परिग्रहण सं० 69396
वर्गीक .....

उत्कृष्ट व्यक्तियों के जीवन-वृत्तान्त जन मानस में मानवीय आदर्शवादिता के लिये आस्था उत्पन्न करते हैं। कहना न होगा कि यह निष्ठा ही लोक-मंगल का मूल आधार है। इसलिये आदर्शवादी व्यक्तियों की जीवन कथाओं की अधिकाधिक जानकारी जनकल्याण की दृष्टि से अतीव उपयोगी एवं आवश्यक मानी जाती है।

युग-निर्माण योजना द्वारा विचार-क्रान्ति के लिये जिस अभिनव साहित्य का निर्माण किया जा रहा है उसमें महामानवों के जीवन चरित्रों की सीरीज को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं में से एक है। ऐसे-ऐसे अनेक जीवन चरित्र छापे जा रहे हैं। हर महीने उनकी संख्या बढ़ जाती है। उनकी जानकारी पत्र लिख कर प्राप्त की जा सकती है। सभी जीवन चरित्र इसी पुस्तक की भाँति ३२ पृष्ठों में हैं। उनका मूल्य ४० पैसा है।

मानवीय आदर्शों के प्रति आस्था रखने वाले प्रत्येक विचारशील व्यक्ति से आशा की जाती है कि वे इस साहित्य को स्वयं पढ़ें और अपने परिवार तथा साथियों को इसे पढ़ावें, सुनावें।

प्रकाशक—'युग-निर्माण योजना' मथुरा।

मूल्य ४० पै०

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org